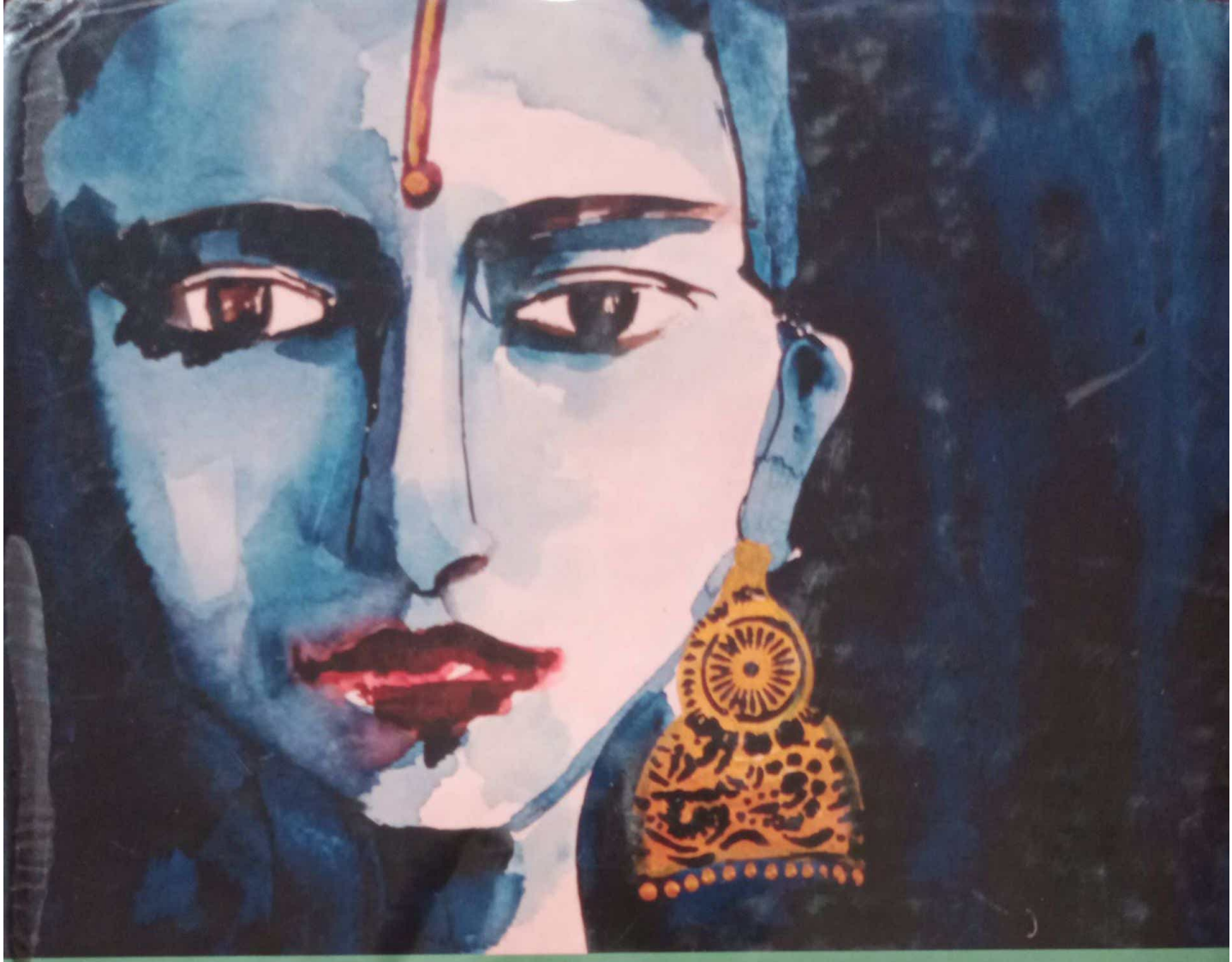

संपादक : प्रोफेसर (डॉ.) शेख शहेनाज़ बेगम अहेमद

किन्नर विमर्श

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक या इसके किसी भी अंश का किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनरुपयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता, इसे संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना कानूनी अपराध है।

ISBN : 978-93-91435-48-6

पुस्तक : किन्नर विमर्श

संपादक : प्रो. (डॉ.) शेख शहेनाज़ बेगम अहेमद

प्रकाशक : संकल्प प्रकाशन

1569/14 नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर, नौबस्ता, कानपुर-208 021

दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872

Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

कॉपीराइट © : संपादक

संस्करण : प्रथम, 2023

मूल्य : 700/-

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर-21

आवरण : गौरव शुक्ल, कानपुर-21

मुद्रक : सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर-21

अनुक्रम

1. किन्नर विमर्श : एक परिचयात्मक अध्ययन
शेख हुसैन मैनोद्दीन 11

2. किन्नर केंद्रित हिंदी उपन्यासों में सामाजिक जीवन
डॉ. शिवाजी वडचकर 18

3. नीरजा माधव कृत 'यमदीप' उपन्यास में किन्नर विमर्श
प्रा. माने शेषराव सुभाषचंद्र 25

4. किन्नर जीवन की त्रासदी
डॉ. पोपट भावराव बिरारी 29

5. किन्नर शब्द का साहित्यिक परिचय
डॉ. आशा कुमारी 34

6. किन्नर समाज पर सामाजिक का मनोवैज्ञानिक प्रभाव
डॉ. राजेश 39

7. किन्नर समाज के प्रति राजनैतिक एवं सामाजिक चिंतन का विकास
डॉ. शालू देवी, डॉ. राजेश 47

8. त्याग और वेदना की प्रतिमूर्ति 'किन्नर'
प्रा. डॉ. शिवसर्जन होनाजी टाले 53

9. किन्नर विमर्श : यमदीप उपन्यास के संदर्भ में
डॉ. नजमा ए. मलेक 59

10. तीसरी ताली : किन्नरों के अकेलेपन की करुण गाथा
प्रा. डॉ. अशोक शामराव मराठे 64

11. किन्नर समाज के सशक्तिकरण में जनसंचार की महत्ता
डॉ. रविंद्र सिंह 70

12. यमदीप का अनुशीलन
जीत कौर 76

2.

किन्नर केंद्रित हिंदी उपन्यासों में सामाजिक जीवन

डॉ. शिवाजी वडचकर

शोधसार

स्त्री और पुरुष समाज की उत्पत्ति के दो प्रमुख घटक हैं। इन दोनों के अभाव में हम समाज के विकास की कल्पना नहीं कर सकते। समाज में इन दोनों वर्गों का हमेशा अपना विशेष महत्व रहा है। किंतु इन दोनों वर्गों के साथ–साथ एक और वर्ग भी है, जो इनके साथ ही चलता रहा है। किंतु समाज से यह वर्ग हमेशा बहिष्कृत एवं उपेक्षित रहा है। जिसे भारतीय समाज में एक विशेष नाम दिया है, जो है हिजड़ा या किन्नर। समाज को अपने जननांगी दोषों के कारण समाज से बहिष्कृत किया गया। यह समाज न तो 'नर' है न ही 'मादा' अर्थात् इसका कोई लिंग नहीं है। यह अलिंगी है। वर्तमान समय में लेखक, लेखिकाओं ने अपनी लेखनी के माध्यम से विमर्श क्यों समाज के सम्मुख रखने का प्रयास किया है। जिसमें किन्नर विमर्श प्रमुख है।

प्रस्तावना– साहित्य और समाज का चोली दामन का संबंध है। 'कॉर्डवेल' ने कहा है कि "साहित्य का मोती समाज की सीपी में ही जन्म लेता है।" अंतः समाज में जो घटित होता है, उसका लेखा–जोखा साहित्य में अभिव्यक्त हुआ करता है। समाज का हर एक विषय साहित्यकार की संवेदना चिंता और चिंतन का विषय होता है। जिसकी अभिव्यक्ति द्वारा साहित्यकार अपनी भूमिका का निर्वाह करता है। साहित्य के माध्यम से ही साहित्यकार समाज से संवाद स्थापित करता है और समाज की चिंताओं को साहित्य के पटल पर लाता है। आज का वर्तमान युग यह विमर्शों के नाम से जाना जाने लगा है। अनेक प्रकार की विमर्शों की चर्चा साहित्य में होने लगी है, उसमें कुछ इस तरह के विमर्श है। नारी विमर्श, दलित विमर्श, किसान विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, आदिवासी विमर्श इत्यादि। जिसके अंतर्गत अनेक प्रकार के विषयों को लेकर साहित्य में लिखा जाने लगा है। खासकर के उपेक्षित वर्गों को लेकर साहित्य में लिखा जाने लगा है। किंतु समाज बहिष्कृत लिंग निरपेक्ष किन्नर समुदाय के विषय में कोई बड़ी चर्चा नहीं हो रही है। इस विषय को लेकर आज हम पहली बार लिखने जा रहे हैं। तो इस बात का हमें डर है, कि किन्नर विमर्श को लेकर लिखना पाप है। हम जो आँखों

से देखते हैं, उसे लेखक अपनी कलम के द्वारा कागज पर उतारता है। 'किन्नर' को लेकर लिखना कोई पाप–पुण्य की बात नहीं है। समाज के सम्मुख, समाज से उपेक्षित समूह को चित्रित करने का साहित्यकारों का योगदान रहा है।

समाज से बहिष्कृत लिंग निरपेक्ष किन्नर समुदाय के विषय में लिखना कोई गलत कदम उठाना नहीं है। हमारे प्राचीन ग्रंथ महाकाव्य 'महाभारत' में एक शिखंडी नामक पात्र था जो किन्नर था। कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में भी किन्नरों का उल्लेख मिलता है। संसार में केवल दो ही लोगों को मान्यता मिली है। एक स्त्री और दूसरा पुरुष। इन दोनों के विपरीत लिंगों को ही सृष्टि का आधार माना जाता है। किंतु हमारे समाज में एक और वर्ग उपस्थित है। वह है लैंगिक विकलांग जिसे उभय लिंगी, तृतीय लिंगी, हिजड़ा, खुसरा, किन्नर, मौसी आदि नामों से जाना जाता है। इस वर्ग को समाज हमेशा घृणित दृष्टि से देखता है। वास्तव में यह समुदाय आज भी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है।

'किन्नर' यह शब्द हिंदी के 'की' और 'नर' के योग से बना हुआ है। उसका संबंध हिमाचल के किन्नर 'जनजाति' से नहीं है। बल्कि उस वर्ग से है, जो पूर्णरूपेण न स्त्री और न पुरुष ही है। वस्तुतः उसे जनसामान्य की भाषा में हिजड़ा कहा जाता है। जब भी हिजड़ा यह शब्द हमारे दिमाग में आता है, तो आँखों के सामने एक खास तरह की भाव भंगिमा, आचार–व्यवहार, रहन–सहन, चाल ढाल वाले इंसानों की छवि आ जाती है। हिजड़ों को परिमार्जित भाषा में किन्नर कहाँ जाता है। हिंदी साहित्यकारों में नीरजा माधव, महेंद्र भीष्म, प्रदीप सौरभ, चित्रा मुद्गल, अनुसया त्यागी, निर्मला भूराडिया आदि ने उपेक्षित समाज की जीवन–शैली, उनकी समस्याओं, पीड़ा–आक्रोश और संघर्ष की अकथ कथा को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है।

नीरजा माधव	–	यमदीप
प्रदीप सौरभ	–	तीसरी ताली
निर्मला भुराडिया	–	गुलाममंडी
चित्रा मुद्गल	–	पोस्ट बॉक्स नं. 203

हमारे लिंगोंपासक समाज में किन्नरों को घोर अभिशप्त माना है। इस समुदाय को समाज ने हमेशा से ही प्रताड़ित किया है। शारीरिक कमी के कारण समाज ने इन्हें हीन दृष्टि से हमेशा देखा है और देखता रहेगा। लिगोंपासक समाज इन्हें इन्सान के रूप में देखना पसंद नहीं करता है। इन्सान ही इन्सान को शत्रु समझता है। "देखो तुम्हारा बार–बार टेलीफोन करना या परिवार से सम्बन्ध रखना, हमारी इज्जत को बढ़ाता नहीं, उलटे तुम्हें भी दुःख होता है और पापा–मम्मी को भी। तुम परिवार में रह नहीं सकती, हम रख भी नहीं सकते। इसलिए यह समझ लो तुम कि अनाथ हो। कोई नहीं तुम्हारा दुनिया में।"[1]

हिन्दी उपन्यासकारों ने किन्नर समुदाय की वेदना, पीड़ा,दर्द और समाज द्वारा हो रही उपेक्षा के साथ–साथ किन्नर समाज के आपसी संघर्ष को भी अभिव्यक्त प्रदान करने का प्रयास किया है। निर्मला भुराडिया का उपन्यास 'गुलाममंडी' देह व्यापार, स्त्री–शोषण, गरीबी की पीड़ा और दुर्गति, ह्यूमन ट्रेफिकिंग आदि विषयों के साथ–साथ तृतीय लिंगी जीवन जी रहे लोगों की समस्याओं को चित्रित करता है। निर्मला भुराडिया ने अपने उपन्यास की प्रस्तावना में व्यक्त किया है कि जबसे दुनिया है, तब से देह व्यापार है। गुलामी के भी कई रूप प्राचीन काल से अब तक दुनिया में विद्यमान रहे हैं। एक समय पर इंसानों की खरीद–फरोख्त बेशर्मी से होती थी। जायज तौर पर होती थी। आज दुनिया भर में इंसान व्दारा दूसरे को खरीदना, फँसाना और गुलाम बना देना नाजायज घोषित हो चुका है। विभिन्न देशों में इसके खिलाफ तरह–तरह के कानून बन चुके हैं। मगर कुछ मनुष्यों के भीतर का शैतान कभी खत्म नहीं होता वह दूसरे इंसानों को प्रताड़ना देने के नए–नए तरीके ढूँढ ही लेता है। जो जायज तौर पर संभव न हो उसे दबे–छुपे षडयंत्र में बदलकर करता है। लिहाजा आज के जमाने में भी इंसानों की खरीद–फरोख्त होती है, देह व्यापार के लिए भी और बेगार के लिए भी जिसे अब ह्युमन ट्रौफिकींग या मानव तस्करी कहा जाता है।''[2]

यह उपन्यास किन्नरों के प्रति सहानुभूति तो जगाता ही है साथ ही मानव जीवन को लेकर कुछ सवाल भी उपस्थित करता है। उपन्यास में देखने पर ज्ञात होता है, कि प्रकृति ने जिसे जिसको जैसा बनाया है उसमें उसका क्या दोष है। क्या कुछ चीजें हम स्वयं तय करते हैं, अगर नहीं तो फिर प्रकृति ने जिसे जो दिया है जैसा बनाया है, उसे उसी रूप में स्वीकार करने में हमें आपत्ति क्यों है ? इस बात को लेकर लेखिका सवाल दागती है। ''बचपन से ही देखती आई हूँ उन लोगों के प्रति समाज के तिरस्कार को, जिन्हें प्रकृति ने तयशुदा जेंडर नहीं दिया। इसमें इन का क्या दोष ? यह क्यों हमेशा त्यागे गए, दूरदुराए– गए, सताए गए और अपमान के भागीदार बने ? इन्हें हिजडा, किन्नर, बृहन्नला कई नामों से पुकारा जाता है ,मगर हमेशा तिरस्कार के साथ ही क्यों ? आखिर यह बाकी इंसानों की तरह मानवीय गरिमा के हकदार क्यों नहीं है ? बस यही प्रश्न हमेशा दिमाग में था इसीलिए इस नावेल में किन्नरों के पात्र रखे गए हैं, समाज की ओर से नहीं। और उनके बारे में उनकी तरफ से लिखा गया मुख्य कथा के समानांतर यह कथा चलती हैं, बल्कि यूँ कहें एक मोड़ पर उसी में धूल–मिल जाती है।''[3]

निर्मला भुराडिया जी ने अपने उपन्यास में गहनतम संवेदना के स्तर पर गुलामी के दंश को बड़ी कुशलता से अभिव्यक्त किया है। इस ज्वलंत विषय को लेकर उनकी कोशिश रही है, कि किन्नर समाज के आसपास भी जो समस्याएँ हैं। उन्हें समझने का प्रयास किया जाये। इतना ही नहीं 'गुलाम मंडी' में समाज

में सर्वाधिक तिरस्कृत वर्ग किन्नर से लेकर जिस्म फरोशी और मानव तस्करी की निर्मोही और भयावह दुनिया को भी उकेरा गया है। इस उपन्यास में हिजड़ों की एकाधिक समस्याओं को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। बस, रेल, समाज में भीख मांगना महानगर में हिजड़ों के गुटों में संघर्ष तथा देह व्यापार से जुड़े गुंडों द्वारा हिजड़ों को भी देह व्यापार में जबरन धकेलना। इसके अतिरिक्त हिजडों की सांस्कृतिक परंपराएँ उनकी आराधना, पद्धति रहन–सहन और उनके अतीत को जानने के लिए लेखिका ने अच्छी खासी संशोधन करते हुए जनसामान्य के समक्ष यह जानकारियाँ प्रस्तुत करने का कार्य किया है।

किन्नर समुदाय का सिर्फ सामाजिक तिरस्कार ही नहीं होता बल्कि उनके जीवन के सभी पहलुओं पर लिंगोपासक समाज गहरा प्रतिघात करता है। जहाँ इन्हें परिवार व समाज नहीं स्वीकार करता वही, इन्हें शिक्षा से भी वंचित रहना पड़ता है। 'गुलाम मंडी' में निर्मला भूरिया अंगूरी के माध्यम से बोलती है। ''कोई भर्ती करता क्या पाठशाला में, पहले पूछते हैं मेल की फीमेल। अपनी वह शर्मीला है न छोरा बनके भर्ती हुई थी, तो बहन जी ने एक दिन चड्ढी उतरवा ली थी उसकी और जूते मार कर के स्कूल से निकलवा दिया था। उसको उमराव गुरु के कुनबे ने शरण दी उसको वरना भूखी मर जाती तो।''[4] लेखिका यहां किन्नरों के प्रति समाज की मानसिकता को बताती है। किन्नर समुदाय के प्रति समाज का नजरिया अमाननीय है। इस कथन में किन्नरों की गहरी संवेदना व्यक्त हुई है। हमारे भारतीय समाज और समुदाय में बहुत बड़ी दीवार खड़ी है। यह समाज हर समय किन्नरों पर चोट करता आ रहा है। साथ ही किन्नरों को अपशब्दों का प्रयोग, गंदी गालियाँ, देकर पुरस्कृत करता है। हमारी संवेदना के कारण ही यह लोग शापित जीवन जीने लगे हैं। हमारा समाज उन्हे अकारण अपमानित करता है। उन्हें कितना मानसिक कष्ट होता होगा, इसका अंदाजा लगा पाना मुश्किल है। वे भी जीव है थोड़े जंतु है।

'मंगलमुखी' उपन्यास में किन्नर की पीड़ा का वर्णन इस तरह से किया है। ''तू लड़की नहीं–हरी से ज्यादा मैं भौचक्की रह गई– यह जानकर कि मैं लड़की नहीं–फिर कौन हूँ मैं–तू किन्नर हूँ किन्नर कहते हुए उसने मुझे लात मार कर बिस्तर से नीचे ठेल दिया। साली !धोखा करती है मेरे साथ, मैं ही पागल था तेरे रूप जाल में फँसकर जो समझ नहीं पाया, तू प्यार मोहब्बत के लिए नहीं बनी ,तू मेरे क्या किसी मर्द के काम के लिए नहीं बनी।''[5] किन्नर के रूप में जन्म लेना यह उनके हाथ में नहीं है। यह जन्म ही एक बहुत बड़ी त्रासदी है। ईश्वर ने इन्हें किन्नर जीवन देकर प्रताड़ित किया है यह भगवान के द्वारा किया गया अन्याय ही है। जननांग दोष होने के कारण परिवार और समाज इनका जीना मुश्किल करता है। ''तू हिजड़ा है हिजड़ा, हमारा तेरे से कोई नाता नहीं, तू हमारा कुछ नहीं लगता, भाग जा यहाँ से क्यों, हमारी नाक कटवाने पर लगा है, हिजड़ा कहीं का।''[6]

जननांग दोष के कारण इन्हें समाज में जो तिरस्कार मिलता है, वह अकथनीय है। इस समुदाय के साथ इतना अधिक भेदभाव होता है, कि इनको कोई काम पर नहीं रखता, ये भीख माँगने के लिए विवश हो जाते हैं। सरकारे भी इनकी ओर ध्यान नहीं देतीं काम न मिलने पर इन्हें भीख माँगनी पड़ती है। महेंद्र भीष्म ने इन्हें 'मैं पायल' उपन्यास में चित्रित किया है। किन्नर को केंद्र में रखकर लिखे गए उपन्यासों में अनुसया त्यागी 'मैं भी औरत हूं इस उपन्यास की बात उल्लेखनीय है कि उपन्यासकार स्त्री रोग एवं प्रस्तुति विशेषज्ञ है। इस उपन्यास में दो बहनों की कथा है, जो लंबे समय तक परिवार वालों को हिजड़ा होने का आभास नहीं होने देता। "रोशनी काँप उठी तब क्या उस लड़के ने जो कहा था, वह सच है वह लड़की नहीं है, वह औरत नहीं है, तब फिर मैं क्या हूँ– क्यों इसीलिए मुझे महावारी प्रारंभ नहीं हुई ? क्या मेरी शादी नहीं हो पाएगी ? क्या मैं कभी माँ नहीं बन पाऊँगी ? ओहो– क्या मैं नपुंसक हूँ पर मेरी ऊपरी बनावट तो ठीक है, पर अंदर कुछ ठीक नहीं है यह सब मुझे कौन बताएगा ?"[7]

इस उपन्यास की दो बहनों का पता चलता है कि वे हिजड़ा, हैं तो दोनों का ऑपरेशन होता है। उसमें एक बहन पूर्ण रूप से स्त्री बन जाती है। उसका विवाह भी होता है वह बच्चे को भी जन्म देती हैं किंतु छोटी बहन नंपुसक ही रहती है। लेखिका ने जहाँ इस उपन्यास में शरीर विज्ञान और चिकित्सा का संबंधी विवरण प्रस्तुत किया है वहाँ किन्नर जीवन की वेदना को गंभीरता के साथ चित्रित किया है।

समाज में किन्नरों को देखकर सामान्य वर्ग इनसे सामाजिक संपर्क नहीं रखता। उच्चतम न्यायालय द्वारा इन्हें तीसरे लिंग के रूप में मान्यता मिली है। इसके पश्चात भी वर्तमान समय में इन्हें पूर्ण रूप से सामाजिक स्वीकृति नहीं मिल पायी है। समाज द्वारा किए गए इस प्रकार के दुर्व्यवहार से व्यथित होकर 'किन्नर कथा' उपन्यास की मुख्य पात्र तारा अपनी व्यथा को अभिव्यक्त करती है "भगवान ने मेरे साथ ऐसा अन्याय क्यों किया ? मैं हिजड़ा हूँ, तो इसमें मेरा क्या कसूर ? मुझ निर्दोष को किस बात की सजा मिल रही है ? मेरा अपना कौन है ? घर, बार, माँ, बाप, भाई, बहन, बच्चे कोई नहीं है मेरा, जिसे मैं अपना कह सकूँ, सब कुछ होते हुए भी कोई मुझसे रिश्ता नहीं रखना चाहता, कोई मुझे अपनाने को तैयार नहीं है। बचपन से आज तक बस अपने आप में ही दर्द पीते हैं। दूसरों को हँसाते आए हैं, तथा दूसरों की खुशियों में शरीक होते आए हैं, आशीष के सिवा कभी किसी को कुछ नहीं दिया। ईश्वर से बस एक शिकायत है। आखिर क्यों उसने हमें ऐसा बनाया ? क्यों हिजड़ा होने का दंड दिया ? काश! हम भी औरों की तरह स्त्री या पुरुष होते, हिजड़ा होना इतना बड़ी सजा है, यह कोई हिजड़ा ही समझ सकता है, दूसरा कोई नहीं कभी नहीं।"[8]

इस कथन में हिजड़ा होने की असीम पीड़ा को परिलक्षित किया गया है। किन्नर होना यानी समस्त रिश्तों का समाप्त हो जाना है। हमारा भारतीय समाज

किन्नरों के साथ धार्मिकता से अलग–अलग व्यवहार करता है। धार्मिक दृष्टि से एक जगह पर इन्हें पवित्र स्थान मिलता है। तो वहीं दूसरी जगह पर व्यवहारिक दृष्टि से इनके साथ अत्यंत है हेय व्यवहार किया जाता है। इन्हें हमेशा के लिए हाशिए पर रखा गया है। समाज में इनके प्रति अनेक गलत धारणाओं को लोगों के मन में भरा गया है। जिसके कारण लोगों की भावनाएँ इनके प्रति नकारात्मक हो गई है। किन्नरों की भी इच्छा होती है, सामान्य मनुष्य के भाँति जीवन जीने की। उनके साथ अछूतों जैसा व्यवहार किया जाए। उसे भी परिवार तथा समाज का पूर्ण सहयोग मिले, किंतु उनकी यह इच्छा पूर्ण नहीं हो पाती। इनको सर्वाधिक आशा अपने परिवार जनों से होती है, कि वह उन्हें स्वीकार करेंगे। प्रेम देंगे किंतु सामान्यतः ऐसा नहीं हो पाता जिसके परिणामस्वरूप वह शापित एवं अभिशप्त जीवन जीने को मजबूर रहते हैं। परिवार से ही उन्हें विस्थापन का दंश होता है। परिवार वालों को पहले यह सोचना चाहिए, कि वह किन्नर होने से पहले वह एक शिशु है। उस शिशु को क्या पता, कि वह जन्म लेने से स्त्री होगा या पुरुष, या तृतीय लिंगी होगा। कहने का मतलब यह है, कि उसे परिवारजनों से ही बहिष्कृत किया जाता है। और फिर समाज में उसके नाम की चर्चा शुरू होती है। समाज उसे हेय दृष्टि से देखता है। कोई भी शिशु किन्नर कहलाने से पहले माँ–बाप का फर्ज होता है, कि वह पहले संतान है। माता–पिता यह न समझते हुए उसे ठुकरा देते हैं। उन्हें अपनी झूठी शान–शौकत, खानदान की इज्जत, मर्यादा की वजह से समाज के समक्ष वह अपनी संतान को त्याग देते हैं। इस प्रकार एक मासूम को पता नहीं होता कि उसका दोष क्या है?

सारांशः उल्लिखित सभी उपन्यास समाज की किन्नरों के प्रति सोच बदलने का एक अच्छा प्रयास है। लोगों का किन्नरों के प्रति जो व्यवहार हैं, उनके प्रति सोच है, निश्चय ही इन उपन्यासों को पढ़ने के पश्चात् उनमें परिवर्तन होगा। साहित्यकारों ने अपनी कलम के द्वारा किन्नर समाज की समस्त समस्याओं और पीड़ा उनको विभिन्न विषयों से विश्लेषण करने का अच्छा प्रयास किया है। किन्नरों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास ही नहीं बल्कि उसे अपने अधिकार देने होंगे। मैं यह मानता हूं कि उसे सरकारी नौकरियों में आरक्षण देना चाहिए। फलतः वह अनैतिक धंधे बंद कर सके तथा एड्स के शिकार भी न होंगे। किन्नर कथा लता अग्रवाल का मंगलमुखी, गुलाममंडी इन उपन्या मे कलम के द्वारा बच्चे को पढ़ा लिखा कर आगे बढ़ाने के लिए भारतीय समाज को बदलने के लिए काम करने का प्रयास किया है।

संदर्भ

1. माधव नीरजा, यमदीप, सामयिक प्रकाशन, पृ. 82

2. निर्मला भुराडिया, गुलाममंडी, सामयिक प्रकाशन, पृ. 5
3. निर्मला भुराडिया, गुलाममंडी, सामयिक प्रकाशन, पृ. 8
4. निर्मला भुराडिया, गुलाममंडी, सामयिक प्रकाशन, पृ. 85
5. डॉ. लता अग्रवाल, मंगलमुखी, विकास प्रकाशन, पृ. 49
6. विष्णु महेंद्र, किन्नर कथा, सामाजिक प्रकाशन, पृ. 51
7. अनुसया त्यागी, मैं भी औरत हूं, परमेश्वरी प्रकाशन, पृ. 17
8. विष्णु महेंद्र, किन्नर कथा, सामाजिक प्रकाशन, पृ. 64
9. विमर्श का तीसरा पक्ष, डॉ. विजेंद्र प्रतापसिंह

हिन्दी अध्ययन मंडल सदस्य स्वा.रा.ती.म. विद्यापीठ नांदेड
कै. रमेश वरपुडकर महा.सोनपेठ जि. परभणी
sayaliswapnilwsa@gmail.com
भ्रमणध्वनी 8983848788

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani